3, 71, 438
प्रसारण संख्या का विश्व कीर्तिमान रचने वाली
भारत की एकमात्र बाल पत्रिका

सर्वाधिक प्रसारित हिन्दी बाल मासिक
देवपुत्र

बाल शहीदों की गौरव गाथा

करतार सिंह सराबा

●रविचन्द्र गुप्ता

करतार सिंह सराबा का जन्म १८९६ में लुधियाना के पास सराबा गांव में हुआ था। वह बचपन में ही अध्ययन हेतु विदेश चले गए। सेनफ्रांसिस्को में गदर पार्टी के लोगों ने 'गदर' पत्र के माध्यम से वहाँ के प्रवासी भारतीयों में देश की आजादी की अलख जगाई हुई थी। उसी से प्रेरित होकर अमेरिका के ४००० भारतीयों ने अपना घर-बार बेच दिया, व्यापार समाप्त किया और धन एकत्र कर युद्ध सामग्री खरीदी।

जहाज किराये पर लिए। युद्ध सामग्री से भरे जहाजों में सवार होकर चार हजार भारतीयों के साथ करतासिंह सराबा भारत को अंग्रेजों से मुक्त कराने निकल पड़े। लेकिन इनका 'तोशामारू' जहाज सरकार ने भारत पहुँचने से पूर्व कोलकाता से पहले ही रोक लिया। युद्ध सामग्री जब्त कर ली। क्रांतिवीरों को बंदी बना लिया। लेकिन धुन का धनी करतारसिंह सराबा अपने कुछ साथियों के साथ बच कर पंजाब पहुँच गया। सराबा ने तुरंत रास बिहारी बोस से संपर्क किया और देश की विविध छावनियों जैसे लाहौर,लायलपुर फिरोजपुर, बनारस व मेरठ आदि में घूम-घूम कर भारतीय सैनिकों को २१ फरवरी, १९१५ को विद्रोह के लिए तैयार किया। इन्होंने लाहौर में बड़े पैमाने पर बम बनाने का कारखाना खोलने में सहयोग प्रदान किया। लेकिन दुर्भाग्यवश किसी ने इस योजना की सूचना सरकार को दे दी। सरकार ने सारे भारतीय सैनिकों को निरस्त्र कर दिया। सराबा को भी गिरफ्तार कर लिया गया और इन्हें १६ नवम्बर, १९१५ को केवल उन्नीस वर्ष की आयु में ही फाँसी दे दी गई। अपने दादा की आँखों में आँसू देख फाँसी से पूर्व यह बोले 'दादा जी! मै रेंग-रेंग कर नहीं मर रहा हूँ। आपका पोता शान से देश पर कुर्बान हो रहा है,किसी बीमारी का शिकार होकर नहीं।'

सराबा ने जेल की कोठरी में कोयले से अपना परिचय इस प्रकार लिखा था –

''यही पाओगे मशाहर में, जबाँ मेरी यकीं मेरा।
मैं बन्दा हिन्द वालों का हूँ, है हिन्दोस्ताँ मेरा।
मैं हिन्दी, ठेठ हिन्दी, खून हिन्दी, जात हिन्दी है।
यही मजहब, यही फिरका, यही है खानदाँ मेरा।''

●पीतमपुरा दिल्ली